रुट ट्रैनर मे भी बीज की बुवाई की जा सकती है। बीजों में अंकुरण 07 से 10 दिवस उपरांत प्रारंभ हो जाता है। अंकुरण के दौरान निंदाई करना अत्यंत आवश्यक है।

रुट ट्रैनर में बीमारी एवं बचाव

रुट ट्रैनर में किसी भी तरह की बीमारी दिखने पर नीम की पत्तियों को 03 से 04 दिन भिंगोकर रखने पर उससे प्राप्त अर्क को पौधों पर छिडकाव करने से बीमारी से बचाव किया जा सकता है।

पॉटिंग मिश्रण

विभिन्न रुट ट्रैनर साइजों में कुल 37 प्रकार के पोटिंग मिक्चर का प्रयोग किया गया। जिसमें अधिकतम पौध वृद्धि रेत + मिट्टी + गोबर खाद (1:1:1) के साथ साथ 20 ग्राम वेम प्रति पौध में पाई गई। अतः यह मिश्रण इस प्रजाति की पौध वृद्धि के लिये अत्यंत उपयोगी होगा।

रुट ट्रैनर का साइज

300 से 400 सीसी साइज के रुट ट्रैनर पौधो की अच्छी वृद्धि के लिए उपयुक्त पाये गये।

रोपण हेतु पौध ऊँचाई / आयु

उपरोक्त साईज के रुट ट्रैनर मे तैयार 06 से 08 माह की आयु के पौधे रोपण हेतु उपयुक्त होते हैं। रोपण के समय पौधे की कुल लंबाई 75 से 77 सेमी या उससे अधिक होनी चाहिए।

उपयोग

इस वृक्ष से प्राप्त लकडी का प्रयोग इमारती लकडी के रूप में, उत्तम गुणवत्ता के फर्नीचर, प्लाईबोर्ड, गणितीय उपकरण, नेवी, बोर्ड, कृषि उपकरण, भवन निर्माण कार्य दरवाजे-खिडकी की चौखट आदि तैयार करने में किया जाता है। इसमें रूट-सकर या कापिस के द्वारा अच्छा पुनरोत्पादन होता है। बडे पौधों से प्रतिरोपण करते समय पौधों को उखाड़कर तने व जड़ को क्रमशः 05 सेमी तथा 15 सेमी छोडकर छंटाई कर, सब्बल से गड्ढाकर लगाया जाता है। रूट-शूट को लगाने की विधि सागौन प्रजाति के समान होती है।

संपर्क

डॉ. अर्चना शर्मा

वरिष्ठ वैज्ञनिक

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र)

(0761) 2666529, 2665540

शीशम
रुट ट्रेनर में उच्च गुणवत्ता के पौध तैयारी

(डलबर्जिया लेटीफोलिया)

वन उत्पादकता प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.) 482008

www.mpsfri.org

Scanned with OKEN Scanner

शीशम (रोजवुड)- -रुट ट्रैनर मे उच्च गुणवत्ता के पौध तैयारी

प्रजाति का नाम - शीशम (रोजवुड)
वनस्पति का नाम- डलबर्जिया लेटीफोलिया

परिचय

यह लैग्यूमिनेसी कुल का वृक्ष है यह पर्णपाती वनों में सागौन के साथ पाया जाता है।

पहचान

इसके वृक्ष तकरीबन 15 से 20 मी. ऊँचे एवं 75 से 150 सेमी. गोलाई वाले होते हैं। इसके फूल सफेद पीले रंग के छोटे एवं बिना डंठल के वृक्ष पर लगे दिखते हैं। इसके फल सेम की फली की तरह लंबे एवं 03 से 08 सेमी लंबे एवं 0.6 से 1.5 सेमी तक चौडे आकार की होती हैं। इसकी छाल पर गहरे धूसर रंग की लंबी धारियों वाली कटी-फटी संरचना वाली होती है। यह वृक्ष तने पर पायी जाने वाली कटी-फटी लंबी धारियों वाली छाल एवं पत्तियों में गोलाई के साथ पाये जाने वाले नुकीलेपन के कारण आसानी से पहचाना जाता है।

प्राप्ति स्थान

यह ज्यादातर हिमालय के तटीय क्षेत्रों में पाया जाता है। इसके साथ ही यह उ.प्र., म.प्र. पंजाब, महाराष्ट्र, कर्नाटक एवं गुजरात में भी पाया जाता है। म.प्र. में यह जबलपुर, ग्वालियर, शिवपुरी, सीधी, बालाघाट आदि जिलों में पाया जाता है।

स्थानीय कारक (Locality Factor)

यह काली कपासी, जलोढ़ मिट्टी पर अच्छी वृद्धि करता है।

बीज चक्र (Seed Cycle)

इसमें प्रतिवर्ष अधिक मात्रा में उच्च गुणवत्ता का बीज उत्पादित नहीं होता है। अर्थात् एक वर्ष के अंतराल पर और कभी कभी दो वर्ष के अंतराल पर उच्च गुणवत्ता का अधिक मात्रा में बीज उत्पादित होता है। इसके प्रत्येक फली में एक से तीन बीज तक पाए जाते हैं।

ऋतुजैविकी (Phenology)

स्थानीय जलवायु के अनुसार फूल एवं फल के समय में भिन्नता देखने को मिलती है परन्तु इस वृक्ष में फूल जनवरी से मार्च के मध्य एवं फल दिसंबर से अप्रैल के मध्य आते हैं। बीज का संग्रहण फरवरी-मार्च के मध्य किया जाता है।

प्रतिकिलो बीजों की संख्या

प्रतिकिलो बीजों की संख्या 25000 से 30000 पायी जाती है।

जीवन क्षमता अवधि

बीज की जीवन क्षमता अवधि 9 से 12 महीने तक होती है।

सुसुप्तावस्था

बीज में किसी भी तरह की सुसुप्तावस्था नहीं होती है।

अंकुरण क्षमता

बीज की अंकुरण क्षमता 30 से 70 प्रतिशत तक होती है।

पौध प्रतिशत

पौध प्रतिशतता 20 से 50 प्रतिशत तक होती है।

उपयुक्त भंडारण विधि

बीज को कमरे के तापमान पर सील्ड पॉलीथीन बैग अथवा जूट के बोरों में भंडारित किया जाना चाहिए।

उपयोगिता की अवधि

बीज को संग्रहण के पश्चात् 06 से 09 माह के अंदर उपयोग कर लिया जाना चाहिए।

बुआई पूर्व उपचारण

बीज को बुवाई पूर्व किसी विशेष उपचार की आवश्यकता नही होती है परन्तु बीज को 24 घंटे ठंडे पानी मे डुबोकर उपयोग करने पर शीघ्र एवं अधिक अंकुरण प्राप्त होता है।

अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम

बीज की बुवाई हेतु उपयुक्त माध्यम रेत है।

बुआई का समय

बीज की बुआई का उपयुक्त समय माह मार्च है।

100 पौधे हेतु आवश्यक बीजों की मात्रा

100 पौधे हेतु 5 से 7 ग्राम बीजों की आवश्यकता होती हैं।

बुआई हेतु उपयुक्त विधि

सीधे बीज की बुआई जर्मिनेशन ट्रे अथवा क्यारी में 5 से 8 सेमी. रेत की परत बिछाकर उपरोक्त दर्शित उपचारण पश्चात् बुवाई करने पर सामान्य अंकुरण से अधिक अंकुरण प्राप्त होता है। परंतु रुट ट्रैनर मे पौध तैयारी के लिये उक्त उपचारण से सीधे बीज उपचारित कर

Scanned with OKEN Scanner